शिष्यता के अनिवार्य तत्व

आवश्यक शिक्षाएं

परमेश्वर एवं आत्मिक क्षेत्र

अध्याय 1 : बुराई का मूल

आत्मिक संसार में, ज्योति की सेनाओं, और अंधकार की सेनाओं के बीच निरन्तर एक युद्ध चलता रहता है। हमारी आराधना, प्रार्थना का जीवन, सब कुछ परमेश्वर की सेवा करने का एक आत्मिक कार्य है, और निश्चय ही इसका प्रभाव आत्मिक क्षेत्र पर पड़ता है, इसलिए हमें शैतान पर नज़र रखनी चाहिए जो हमें धोखा देता है और हमें परमेश्वर की सेवा करने से भटकाता है। इस अध्याय में हम देखेंगे कि कैसे हम इस युद्ध में आए, जाँचेंगे कि इस युद्ध की शुरूआत से पहले यह कैसा था और खोजेंगे कि गिराने के बाद परमेश्वर की क्या प्रतिक्रिया थी। हम ध्यान देंगे कि क्यों आज के मसीही के लिए शत्रुओं से परमेश्वर की चीज़ें (यानि कि पुरूषों और स्त्रियों की आत्माएं) वापस लेने की परमेश्वर की योजना का भाग बनना महत्वपूर्ण और उचित है?

अगर परमेश्वर भले हैं, तो संसार में बुराई क्यों है? सभी उत्तर बाइबल में पाए जा सकते हैं। चलिए हम ध्यान से जाँचें कि शैतान वास्तव में कौन है, उसका अतीत किस तरह का था और भविष्य के लिए उसकी क्या योजनाएं हैं। शत्रु के विरूद्ध आगे बढ़ने के लिए हमें यह जानना आवश्यक है कि वह कौन है।

परमेश्वर ने मनुष्य के लिए योजना बनायी थी कि वह धरती पर परमेश्वर की सृष्टि पर शासन करेगा। परमेश्वर की ईश्वरीय, सर्वश्रेष्ठ योजना– परमेश्वर पूरे स्वर्ग और धरती पर स्वामी होंगे, और मनुष्य धरती पर शासन करेगा।

हम केवल कल्पना कर सकते हैं कि जब परमेश्वर ने आदम और हव्वा की रचना की और उन्हें पृथ्वी का अधिकार दिया तब संसार कितना परिपूर्ण रहा होगा। पृथ्वी अपनी सबसे अधिक परिपूर्ण और शुद्ध दशा में थी जहाँ कोई पाप, बीमारी या मृत्यु जैसी कोई चीज़ नहीं थी। सबसे ऊपर, उत्तम चीज़ यह थी कि वहाँ पर सृष्टिकर्ता (परमेश्वर) और सृष्टि (आदम और हव्वा) के बीच एक नियत, निरन्तर सदस्यता और सहभागिता थी।

सभी चीज़ें जो परमेश्वर ने रचीं वे इतनी सुन्दर और परिपूर्ण थीं कि, हर दिन की रचना पूरी करने के बाद परमेश्वर अपने कार्य को देखते थे और कहते थे कि वह अच्छा था!

परन्तु यह परिपूर्ण स्वर्ग जल्द ही नाश होने वाला था। शैतान के पास परमेश्वर को हराने की एक बड़ी योजना थी, वह परमेश्वर की श्रेष्ठतम् रचना, आदम और हव्वा का, परमेश्वर की बनाई सृष्टि को विनाश करने के लिए प्रयोग करने जा रहा था।

शैतान धोखे और धूर्तता के द्वारा उनसे परमेश्वर की एकमात्र दी गयी आज्ञा का उल्लंघन करवाने वाला था। उत्पत्ति 2:16–17 में लिखा है, "और यहोवा परमेश्वर ने आदम को यह आज्ञा दी, "तू वाटिका के सब वृक्षों का फल बिना खटके खा सकता है; पर भले और बुरे के ज्ञान का जो वृक्ष है, उसका फल तू कभी न खाना : क्योंकि जिस दिन तू उसका फल खायेगा उसी दिन अवश्य मर जाएगा।"

अब, आप शायद सोच रहें होंगे : शैतान कहाँ से आया? चलिए हम शैतान की उत्पत्ति खोजें। हम इसे यशायाह 14:12–15 में देखते हैं, "हे भोर के चमकने वाले तारे, तू कैसे आकाश से गिर पड़ा है? तू जो जाति–जाति को हरा देता था, तू अब कैसे काटकर भूमि पर गिराया गया है? तू मन में कहता तो था, 'मैं स्वर्ग पर चढ़ूँगा; मैं अपने सिंहासन को ईश्वर के तारागण से अधिक ऊँचा करूँगा; और उत्तर दिशा के छोर पर सभा के पर्वत पर विराजूँगा, मैं मेघों से भी ऊँचे–ऊँचे स्थानों के ऊपर चढ़ूँगा, मैं परमप्रधान के तुल्य हो जाऊँगा।' परन्तु तू अधोलोक में उस गड़हे की तह तक उतारा जाएगा।"

शैतान अहंकारी हो गया और उसे परमेश्वर की उपस्थिति से निकाल दिया गया। इससे हमारे सामने दो महत्वपूर्ण प्रश्न खड़े होते हैं :

1. वह बुरा कैसे बना?

2. कैसे शैतान के द्वारा बुराई इस संसार में फैली?

यशायाह 13:11 और 16:18 हमें इसके उत्तर मिल जाते हैं। ये दोनों पद अहंकार के विषय में बताते हैं। अहंकार सभी बुराईयों की जड़ है। अहंकार ही था जिससे इबलीस (लूसीफर) ग़लत सोचने लगा कि वह परमप्रधान परमेश्वर के जितना शक्तिशाली हो सकता है। संक्षेप में, अहंकार और स्वार्थीपन विनाश लाता है। पतन से पहले घमण्ड होता है, अहंकारी लोग सीधे–सीधे परमश्वेर के क्रोध का सामना करते हैं। आज, ज़्यादातर पाप जो हम करते हैं वह इसलिए होते है क्योंकि या तो हम अहंकारी हैं, या फिर हम स्वार्थी हैं।

ये पद शैतान की पूरी कहानी प्रगट करते हैं, कैसे वह बनाया गया, और किस वजह से वह बुराई में पड़ा। परमेश्वर ने शैतान को अच्छे कामों के लिए बनाया परन्तु यह प्राणी परमेश्वर से फिर गया और उसकी जगह वह परमेश्वर का शत्रु बन गया। परमेश्वर ने आदम और हव्वा को पूरी सृष्टि के ऊपर शासन और अधिकार और आनन्द इस आज्ञा

के साथ दिया कि वे जीवन के वृक्ष और भले और बुरे के ज्ञान के वृक्ष के फल नहीं खा सकते।

परमेश्वर की सीधी आज्ञा के उल्लंघन का परिणाम मनुष्य का गिराया जाना था। उत्पत्ति 3:6–9 में हम उन घटनाओं के क्रम को पढ़ते है जो गिराये जाने की ओर ले जाते हैं।

एक छोटे क्षण के लिए आदम और हव्वा ने परमेश्वर की आज्ञा नहीं मानी और उन्होंने शैतान के झूठ पर ध्यान दिया।

गिराये जाने की वजह से परमेश्वर और मनुष्य के बीच एक तरह से इतनी दूरी आ गयी कि अब मनुष्य परमेश्वर की चीज़ों को नहीं समझ सकता। पौलुस 2 कुरिन्थियों 4:3–4 में इसके विषय में बात करते हैं, कि लोग सांसारिक चीज़ों के द्वारा अंधे हो जाते हैं, और वे समझने में और उनके सच्चे सृष्टिकर्ता; स्वर्ग और पृथ्वी के स्वामी के साथ सदस्यता रखने में सक्षम नहीं होते।

हम देख चुके हैं कि कैसे परमेश्वर ने जो कुछ बनाया वह भला और सुन्दर था और शैतान ने अपनी बुरी योजना से पुरूष और स्त्री को परमेश्वर की आज्ञा न मानने के लिए उकसाया। आदम और हव्वा के आज्ञा उल्लंघन के कारण वे गिराये गये और बुराई ने इस संसार में प्रवेश किया। शैतान शासन करने और शक्ति के लिए, परमेश्वर की सृष्टि के विरूद्ध युद्ध लड़ता रहता है।

फिर भी, हमें याद रखना चाहिए कि परमेश्वर अधिकार में है। भले ही शैतान हमें परमेश्वर की इच्छा से दूर ले जाना चाहता है और सारी मानव–जाति को नियंत्रित करना चाहता है, परमेश्वर अब भी हमें वह सदस्यता और सहभागिता लौटाना चाहते हैं जिसका आनन्द आदम और हव्वा गिराये जाने से पहले लेते थे।

परमेश्वर ने मनुष्य के साथ सब कुछ खत्म नहीं किया; उन्होंने अपनी रचना को नहीं छोड़ा। अतः अब परमेश्वर ने खुद शैतान के विरूद्ध युद्ध अपेन हाथों में ले लिया है। परमेश्वर की योजना हमें शैतान की पकड़ से वापस जीतने की थी। परमेश्वर की अनन्त योजना में, उन्होंने अपने पुत्र – प्रभु यीशु – को समस्त मानव–जाति के लिए मरने भेजा। उनकी मृत्यु, मनुष्य का परमेश्वर के साथ रिश्ता बनाने के लिए एक बलिदान थी।

आज, स्वर्गीय राज्यों में अच्छाई और बुराई के बीच एक युद्ध लड़ा जा रहा है। हमने श्रृंखला के पहले भाग में देखा कि जब शैतान इस संसार में आया, पाप ने भी इस संसार में अपने प्रवेश का मार्ग बना लिया। मूल रूप से पाप परमेश्वर के विरूद्ध विद्रोही है, और जब से शैतान की पकड़ रही है, तब से एक आत्मिक युद्ध होता आया है।

गिराये जाने से पहले, वहाँ पर सृष्टिकर्ता (परमेश्वर) और सृष्टि (आदम और हव्वा) के बीच एक नियत, निरन्तर सदस्यता और सहभागिता थी। गिराये जाने की वजह से परमेश्वर और मनुष्य के बीच एक तरह से इतनी दूरी आ गयी कि अब मनुष्य परमेश्वर की चीज़ों को नहीं समझ सकता। पाप के परिणाम एक शारीरिक मृत्यु से अधिक थे... परमेश्वर और मनुष्य के बीच के परिपूर्ण सम्बन्ध की मृत्यु हो गई थी।

दुश्मन की प्रगति को रोकने के लिए और इस युद्ध को लड़ने के लिए परमेश्वर मसीहियों की एक सेना खड़ी कर रहे हैं। परमेश्वर चाहते हैं कि हम एक आत्मिक योद्धा बनें। आत्मिक युद्ध में सबसे शक्तिशाली हथियारों में से एक "प्रार्थना" है। परमेश्वर के एक दास को, एक विश्वासी को शैतान के फंदों से बचने के लिए प्रार्थना करनी चाहिए। अगर हम प्रतिदिन प्रार्थना करने में असफल रहते हैं और परमेश्वर से सामर्थ्य माँगते हैं तो हम शैतान को पाँव जमाने के लिए एक सुरक्षित स्थान देते हैं, क्योंकि प्रतिदिन प्रार्थना न करना ऐसा है जैसे हम कह रहे हों कि "हमें आज परमेश्वर की ज़रूरत नहीं है"। प्रार्थना के द्वारा हम लालच के विरूद्ध, और अन्य राज्यों और शक्तियों के विरूद्ध लड़ सकते हैं जो हमें परमेश्वर की इच्छा के कार्यों को करने से रोकते हैं। प्रार्थना के द्वारा हम अपने परिवार और मित्रों के जीवनों के लिए निवेदन कर सकते हैं जिन्होने अभी तक उद्धार नहीं पाया है।

एक प्रार्थना – रहित जीवन, आदम और हव्वा के गिराये जाने के दौरान जो हुई बातों की ओर अगुवाई करेगा और उन्ही बातों को दुबारा दोहराने जैसा होगा अर्थात – परमेश्वर के साथ अपनी सहभागिता और सदस्यता खोना, धरती पर बीमारी और उनके जीवन में पाप, और मृत्यु का प्रवेश होना। यह एक युद्ध है जिसे मसीह के चेले होने के तौर पर हमें प्रतिदिन लड़ना है!

सुर्खियां

- शैतान को बनाना परमेश्वर की योजना का हिस्सा नहीं था। परमेश्वर ने इस सृष्टि की रचना की, और मनुष्य को इसके ऊपर अधिकारी ठहराया।

- परमेश्वर अपनी रचना से खुश थे, जब उन्होंने अपने हाथों के कार्य को जाँचा, उन्होंने देखा कि वह अच्छा था।

- शैतान, जिसे स्वर्ग से निकाल दिया गया था उसने मानव–जाति का प्रयोग करते हुए परमेश्वर के विरूद्ध उठकर विद्रोह करने की योजना बनाई।

- आदम और हव्वा के पाप करने के बाद, उन्हें भी अदन की वाटिका से निकाल दिया गया, और तब से हम परमेश्वर के साथ आत्मिक सम्बन्ध का आनन्द उठाने में असमर्थ हैं।

- प्रभु यीशु की मृत्यु और पुनरूत्थान ने हमारे पापों का प्रायश्चित किया है, और अब, मसीहियों के तौर पर हम परमेश्वर के साथ दोबारा वह सम्बन्ध पा सकते हैं।

- मुख्य रूप से आत्मिक युद्ध लोगों की आत्माओं के लिए है, जिसके द्वारा शैतान का लक्ष्य हम सबको परमेश्वर की इच्छा से दूर ले जाना है।

- परमेश्वर के चेलों के रूप में खड़े होने के लिए, निरन्तर प्रार्थना करने, परमेश्वर के साथ सदस्यता, और शैतान के हमलों से सर्तक रहने के द्वारा हमें युद्ध में एक सक्रिय भूमिका निभाने की ज़रूरत है।

अब आप बताएं

- क्या आप कभी अपने जीवन के उन क्षेत्रों को पहचानने में सक्षम हुए हैं जो स्वार्थी या बुरे भी रहे हों? अगर हाँ, तो आप उसे कैसे बदल सकते हैं?

- मूल्यांकित कीजिए कि क्या आपका परमेश्वर के साथ एक आत्मिक सम्बन्ध है? श्रृखंला के इस हिस्से को पढ़ने के बाद, प्रार्थना कितनी महत्वपूर्ण है?

- आप कैसे परमेश्वर की सेना का हिस्सा बन सकते हैं?

- दूसरों को मसीह तक ले जाने के लिए प्रार्थना कितनी महत्वपूर्ण है?

बाइबल के हवालों को पवित्र बाइबल, बाइबल सोसाइटी ऑफ इण्डिया (बी.एस.आई.) से लिया गया है। इन हवालों को प्रकाशित करने की अनुमति ली गयी है। इसके सारे अधिकार आरक्षित हैं।

अन्य सभी सामग्री © 2019 ट्रांस वर्ल्ड रेडियो कनाडा है, और इसका उपयोग किसी भी तरह से किया जा सकता है, जब तक आप इसका उपयोग मसीह के लिए दुनिया तक पहुंचने के उद्देश्य से करते हैं और सामग्री के उपयोग के लिए शुल्क नहीं लेते हैं। अधिक लाइसेंस विवरण देखें: www.discipleshipessentials.org/licensing